फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स द्वारा आयोजित *43*वें एक्सिलेन्स इन बुक प्रॉडक्शन पुरस्कार समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

प्रेसिडेंट एमिरेटस, श्री अशोक के. घोष जी ;

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के प्रेसिडेंट, श्री रमेश के. मित्तल जी ;

पदाधिकारीगण और कार्यकारी समिति के सदस्यगण;

विशिष्टजन, सम्मानित अतिथिगण, देवियो और सज्जनो:

.....

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स द्वारा आयोजित 43वें एक्सिलेन्स इन बुक प्रॉडक्शन पुरस्कार समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आप सभी के बीच आकर मुझे सुखद अनुभूति हो रही है। भारत के विविधतापूर्ण प्रकाशन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले आप सभी लोगों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं।

यह समारोह समृद्ध साहित्यिक परंपरा और देश में प्रकाशन उद्योग की जीवंतता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मैं सहभागिता को बढ़ावा देने, प्रकाशन उद्योग में सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के हितों की पुरजोर ढंग से बात रखने के लिए फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स की सराहना करता हूं।

देश भर के प्रकाशकों को एक मंच पर साथ लाने में फेडरेशन की भूमिका इस उद्योग की सामूहिक आवाज को मजबूती प्रदान करती है। इससे प्रकाशन क्षेत्र में तेजी से हो रहे बदलावों से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलती है।

आपका फेडरेशन प्रकाशन क्षेत्र के 80 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है और गुणवत्ता, नवाचार तथा साहित्य एवं शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में इसकी प्रतिबद्धता प्रामाणिक और सराहनीय है।

मुझे बताया गया है कि फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स इस वर्ष अपनी गौरवशाली स्वर्ण जयंती मना रहा है। आपके स्वर्ण जयंती वर्ष पर आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

किताबें हमारे जीवन की सबसे अच्छी साथी होती हैं। जब भी हमें उनकी आवश्यकता होती है वे हमारे लिए उपलब्ध होती हैं। किताबें हमारी आसपास की दुनिया को समझने, सही और गलत के बीच निर्णय लेने में हमारी मदद करती हैं।

वे हमारे आदर्श, मार्गदर्शक या सर्वकालिक शिक्षक के रूप में भी हमारे जीवन में शामिल होती हैं। इस दुनिया में किताबें पढ़ने से बड़ा सुख शायद ही कोई ओर हो। तभी तो किताबों को सबसे अच्छा मित्र कहा जाता है। किताबें जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर हमारा मार्गदर्शन करती हैं।

आज की तेजी से बदलती और डिजिटल होती दुनिया में किताबें अभी भी संतुष्टि, प्रेरणा और ज्ञान का स्रोत बनी हुई हैं। वे लिखे हुए शब्दों की स्थायी शक्ति का प्रमाण हैं।

अपनी पांडुलिपियों में अपना हृदय और आत्मा उड़ेल देने वाले लेखकों से लेकर उन्हें तैयार करने तथा उनका प्रचार करने वाले प्रकाशकों का समाज में विशेष महत्व है।

हर पुस्तक को एक कलाकृति में बदल देने वाले डिजाइनरों और प्रिंटरों तक – आप सभी के सामूहिक प्रयास हमारे समाज को अनगिनत तरीकों से समृद्ध बनाते हैं। यह पुरस्कार समारोह, विशेष रूप से, प्रकाशन जगत के उन गुमनाम नायकों, उन लोगों और समूहों को पहचान दिलाने और उनको सम्मानित करने का एक मंच है, जो पुस्तकों को प्रकाशित करने के लिए नेपथ्य में रहकर अथक प्रयास करते हैं।

मैं आज के सभी पुरस्कार विजेताओं और नामांकित होने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूं। पुस्तकों के प्रति आपका समर्पण, गुणवत्ता के प्रति आपकी प्रतिबद्धता वास्तव में प्रेरणादायी है।

आप सभी अपनी रचनात्मकता का विस्तार करते रहें, उत्कृष्टता के लिए प्रयास करते रहें और हम सभी को ज्ञान, प्रेरणा प्रदान करने तथा संगठित करने के लिए पुस्तकों की ताकत का स्मरण कराते रहें।

इन दिनों इंटरनेट, मोबाइल फोन और कंप्यूटर का इस्तेमाल बहुत आम हो गया है। छात्र इन तकनीकों को अध्ययन के लिए एक अच्छा विकल्प मानते हैं लेकिन ये तकनीकें किताबों के महत्व को कभी खत्म नहीं कर सकतीं।

जब हम किताबें पढ़ते हैं, तो हमें कई नई जानकारियां मिलती हैं लेकिन कई अनसुलझी बातें भी होती हैं। इन सवालों का जवाब पाने के लिए हमें और अध्ययन करना होगा।

इससे छात्रों में पढ़ने और खोजने की क्षमता बढ़ती है। यह हमारे दिमाग का एक अच्छा व्यायाम है और हमारे दिमाग को तेज करने का सबसे अच्छा तरीका भी है।

अन्य क्षेत्रों की तरह प्रकाशन उद्योग में भी बहुत सारे बदलाव आए हैं। ई-प्रकाशन के अनेकानेक लाभ हैं, जिनके चलते इस सेक्टर में काफी बदलाव आया है।

इस माध्यम ने साहित्य को सबके लिए सुलभ बना दिया है, क्योंकि अब इस संबंध में भौगोलिक सीमाएं नहीं रहीं है तथा शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों के पाठकों को डिजिटल पुस्तकों का विशाल संग्रह आसानी से उपलब्ध हो रहा है।

इसके अलावा, ई-प्रकाशन ने नवोदित लेखकों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए भी एक मंच उपलब्ध कराया है जिससे उनकी परंपरागत प्रकाशन माध्यमों पर निर्भरता कम हुई है।

भारतीय प्रकाशकों के लिए उत्कृष्ट पुस्तकों के प्रकाशन का प्रयास एक सतत और जीवंत प्रक्रिया है। मैं कुछ ऐसी रणनीतियाँ सुझाना चाहता हूँ, जिन्हें अपनाने से भारतीय प्रकाशकों को भविष्य में और अधिक पुस्तकों का प्रकाशन करने के कार्य में सहायता मिलेगी।

इन रणनीतियों को अपनाकर और साहित्य के प्रति अपने जुनून को कायम रखकर भारतीय प्रकाशक वैश्विक प्रकाशन जगत में भविष्य में भी अपना प्रभाव बनाए रख सकते है।

सबसे पहले हमें प्रकाशन क्षेत्र में डिजिटल प्रिंटिंग, ई-पुस्तकों और ऑनलाइन डिस्ट्रीब्यूशन प्लेटफॉर्म्स जैसी नवीनतम तकनीकों को अपनाने के लिए तैयार रहना होगा। प्रौद्योगिकी के माध्यम से उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर व्यापक स्तर पर पुस्तकों को पाठकों तक पहुंचाया जा सकता है।

दूसरा, हमें संपादन, प्रूफ रीडिंग, डिजाइन और प्रिंटिंग सहित पूरी प्रकाशन प्रक्रिया के दौरान उच्चतम स्तर की गुणवत्ता बनाए रखनी होगी। उत्कृष्ट पुस्तकें प्रकाशित करने का ध्येय हो तो गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता है। तीसरा, हमें विविध लेखकों और दृष्टिकोणों को बढ़ावा देना चाहिए।

भारत सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और विविधतापूर्ण देश है तथा इसकी झलक साहित्य में भी मिलनी चाहिए। अलग - अलग पृष्ठभूमि से आने वाले लेखकों को खोजकर उन्हें बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

बेहतरीन पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए ज़रूरी है कि आप संपादकों, डिजाइनरों तथा प्रोडक्शन टीम सहित अपने समस्त स्टाफ को प्रशिक्षण दें।

इसके अलावा, पुस्तक का डिजाइन आकर्षक हो, इस ओर भी ध्यान देना जरूरी है। एक आकर्षक पुस्तक न केवल हमारे पुस्तक पढ़ने के अनुभव को बेहतर बनाती है बल्कि बुकशेल्फ

की ओर हमारा ध्यान भी खींचती है। पाठकों की पसंद और रुझान को समझने के लिए गहन मार्केट रिसर्च की जानी चाहिए।

अपनी पुस्तकों को पाठकों तक पहुंचाने और उनसे संपर्क कायम करने के लिए वेबसाइट्स, सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी डिजिटल उपस्थिति दर्ज करानी भी ज़रूरी है।

प्रकाशन उद्योग को उभरते हुए लेखकों को नए अवसर और सहायता प्रदान करनी चाहिए और साहित्य जगत में योगदान देने के लिए नए दृष्टिकोणों और नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रकाशन उद्योग को प्रौद्योगिकी में आए बदलावों को अपनाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

प्रकाशन उद्योग का तेजी से विकास हो रहा है और प्रकाशकों को नए फॉर्मेट और बिजनेस मॉडल की सहायता से कार्य करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

कापीराइट और बौद्धिक संपदा अधिकार कानूनों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए ताकि लेखकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और उनके कार्यों को संरक्षित रखा जा सके।

हमारे देश की संस्कृति अति प्राचीन है और हमारे यहाँ साहित्य की समृद्ध परंपरा रही है।

हमारे यहां असंख्य प्राचीन ग्रंथ संस्कृत और अन्य प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध है। इन ग्रंथों को विभिन्न भाषाओं में अनुदित कर कम मूल्य पर आम लोगों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

भारतीय साहित्य विश्व स्तर पर भी लोकप्रिय है। अतः हमें अंतरराष्ट्रीय बाजारों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अनुवाद के माध्यम से भारतीय प्रकाशक व्यापक स्तर पर पाठक वर्ग से जुड़ सकते हैं।

प्रकाशन प्रक्रियाओं के निरंतर मूल्यांकन से दक्षता में सुधार किया जा सकता है, लागत को कम किया जा सकता है और गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है।

आज जब हम प्रकाशन में उत्कृष्टता का उत्सव मना रहे हैं, हमें इससे जुड़े दायित्वों पर भी विचार करना चाहिए। शब्दों में अपार शक्ति होती है और इनका प्रयोग करके लोग समाज को एक नया स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

अधिक शक्ति के साथ अनेक दायित्व भी जुड़े होते हैं तथा प्रकाशकों और लेखकों के रूप में यह आपका कर्तव्य है कि आप अपने प्रभावी व्यक्तित्व का विवेकपूर्ण उपयोग करें, अपने कार्यों में विविधता, सहिष्णुता और समावेशिता को बढ़ावा दें।

भारतीय प्रकाशन उद्योग को देश की सांस्कृतिक विविधता और भाषायी विविधता को उजागर करने की आवश्यकता है और इन आयामों को इन विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित कर रेखांकित किया जा सकता है।

लुप्त हो रही भाषाओं और बोलियों के ऊपर भी पुस्तकें भी प्रकाशित होनी चाहिए और देश के सुदूर क्षेत्रों के लेखकों की पुस्तकों को प्रकाशित कर उन्हे बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

लोक–गीत और लोक कथाओं की परम्परा हर प्रदेश का खुला हुआ हृदय होती है। लोक गीतों और लोक कथाओं में संस्कृति और परम्पराएं सजीव रूप से चित्रित होती हैं।

लोक गीतों पर आधारित किफायती मूल्य पर पुस्तकें भी प्रकाशित होनी चाहिए। इसी प्रकार कुछ भाषाएं और बोलियाँ भी लुप्त होने के कगार पर हैं। ऐसी भाषाओं को को संरक्षण देना भी प्रकाशन उद्योग का दायित्व है।

यह कहा जाता है कि ज्ञान से विचार आते हैं और विचार से परिवर्तन आता है। संसदीय लोकतंत्र में संसदविद समाज के नेताओं के रूप में परिवर्तन के वाहक भी होते हैं।

परिवर्तन की गुणवत्ता अनिवार्य रूप से परिवर्तन के अग्रदूतों के पास उपलब्ध सूचना की मात्रा और गुणवत्ता से जुड़ी होती है।

नीतियों और किसी प्रभावी विधान को तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान उस ज्ञान की मात्रा और गुणवत्ता का होता है जिस पर वह नीति और विधान आधारित होता है।

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स द्वारा इस पुरस्कार वितरण समारोह में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने और अपने विचार साझा करने का अवसर देने के लिए आपका धन्यवाद।

मैं एक बार फिर पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखकों, उद्यमियों और प्रकाशन क्षेत्र की विभिन्न विधाओं से जुडें विजेताओं को बधाई देता हूं और प्रकाशन उद्योग के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।